अकबर की 16वीं # मी-टू : झूठ बोलना बंद करो, तुमने मेरा भी यौन उत्पीड़न किया था!

तुषिता पटेल

पीड़ित को शर्मिंदा करने वाले प्रयास और अहम मूर्खतापूर्ण बयानों में तुम्हारे पश्चाताप विहीन, तुम्हारे झूठ, तुम्हारे हास्यास्पद तर्कों, तुम्हारी संवेदनहीनता के बारे में पढ़ रही हूं लेकिन चकित नहीं हूं। अगर मैं अब नहीं बोलती हूं तो ऐसा महसूस करूंगी कि मैं तुम्हारे अपराध में साझीदार हूं।

ये 1992 का कोलकाता था। मैं टेलीग्राफ में एक ट्रेनी थी। तुमने राजनीति के लिए पत्रकारिता छोड़ दी थी और तुम एक दौरे पर कोलकाता आए थे। मेरे सहकर्मियों का एक समूह तुमसे मिलने होटल जा रहा था। मुझसे पूछा गया कि क्या मैं अकबर से मिलना चाहूंगी। कौन नहीं चाहेगा? निश्चित। मैं भी साथ गयी। मैं तुमसे मिली। ये बिल्कुल मजेदार शाम थी। उस दिन के बाद तुमने मेरा नंबर हासिल कर लिया (किसी दूसरे से) और फिर लगातार मुझे फोन करना शुरू कर दिया। जिसमें तुम मुझे अपने होटल में मिलने के लिए कहते थे।

ये सब कुछ हमेशा काम से जुड़ी बातचीत करने की आड़ में करते थे। तुम्हारे ढेर सारे प्रस्तावों को नकारने के बावजूद आखिर में तुम मुझे झुकाने में कामयाब हो गए। खुद को पुराने फैशन वाली न बनने की बात को समझाते हुए मैं तुम्हारे होटल पहुंच गयी और दरवाजे को खटखटाया।

तुमने अंडरवीयर में ही दरवाजा खोला। मैं बिल्कुल चकित, डरी और सहमी दरवाजे पर खड़ी रही। तुम मेरे डर को अचरज भरी नजरों से देखते हुए एक वीआईपी की तरह वहां खड़े थे। मैं अंदर गयी और डर से निकलने के लिए तब तक बड़बड़ाती रही जब तक कि तुमने बाथरूम का गाउन नहीं डाल लिया। उसके बारे में तुम क्या कहोगे, वो क्या था? क्या 22 साल की एक लड़की का स्वागत बिल्कुल नंगे होकर करना तुम्हारी नैतिकता की परीक्षा थी? क्या वो "कुछ करना" नहीं था? मेरे पास तुमको लेकर कुछ उसी तरह की सोच है। उस घटना के बाद एक विदेश मंत्री भारत का प्रतिनिधित्व कर रहा है इस रूप में तुमको देख पाना बहुत कठिन है।

मुझको जब छुटकारा मिला

1993, हैदराबाद। तुम "डेकन क्रोनिकल" के एडिटर-इन-चीफ थे और मैं एक सीनियर सब एडिटर। तुम शहर में आए और मेरे पेजों के बारे में बातचीत करने की बात कह कर तुमने मुझे होटल में बुलाया। मुझे देर हो गयी थी (मुझे अपना पेज पूरा करना था।)। जब मैं तुम्हारे कमरे पर पहुंची तुम बहुत उदास थे, बैठकर बिल्कुल उखड़े मूड में चाय पी रहे थे। देर से आने के लिए और मेरे काम को लेकर तुमने मुझे डांटना शुरू कर दिया।

मैं बोलने की कोशिश में कुछ बड़बड़ा रही थी। एकाएक तुम उठ खड़े हुए, तुमने मुझे भींच लिया और तेजी से किस कर लिया- तुम्हारी चाय पीते वक्त ली जाने वाली सांस और चमकदार मूंछें आज भी मेरी पुरानी यादों के एक कोने में जिंदा हैं। मैं निकल कर बाहर भागी और तब तक दौड़ती रही जब तक रोड पर नहीं पहुंच गयी। उसके बाद एक आटो में कूद पड़ी और फिर जोर-जोर से रोना शुरू कर दिया। एक अजनबी के आटो में खुलकर रोने के बाद कुछ रिलैक्स हुई।

अगली सुबह मैं दफ्तर आयी और खुद को एक कोने में छुपाकर पेज को फाइनल करने का प्रयास करने लगी। तुम्हारे साथ काम करने के दौरान एक जो दूसरी खास बात थी वो ये कि हम लोगों के पास कभी संसाधन नहीं हुआ करते थे। कर्मचारियों की संख्या हमेशा जरूरत से कम होती थी। तुम हमेशा हम लोगों को अखबार की भलाई के लिए अपनी साप्ताहिक छुट्टियों की बलि देने के लिए कहते थे और हम किसी भी दूसरी चीज के मुकाबले अपने काम से प्यार करते थे और इस तरह से महसूस करते थे जैसे ये सब कुछ सामान्य हो। जब तुमने मुझको नहीं पाया तो पूरे बदहवासी में एक खोजी दल को मुझे ढूंढने के लिए भेज दिया।

तब तक किसी ने मुझे देख लिया। अकबर साब तुमको याद कर रहे हैं। डर के साथ पूरे भारी मन से मैंने तब तक इंताजर किया जब तक तुम्हारी फ्लाइट का समय न हो जाए। फिर तुमसे दफ्तर में रिसेप्शन के पास एक बिल्कुल सार्वजनिक जगह पर मिली। तुमने मुझसे बिल्कुल गरमागरम अंदाज में पूछा कि "तुम कहां गायब हो गयी थी? मैं तुम्हारा इंतजार कर रहा था- हमें तुम्हारे पेज को लेकर बातचीत करनी थी।" और उसके साथ ही तुमने मुझे एक खाली कांफ्रेंस रूम की तरफ खींच लिया। फिर पक़ड़ कर किस कर लिया।

अंदर से पस्त, अपमानित महसूस करते हुए आंख में भरे आंसुओं ने मुझे लगभग अंधा कर दिया था। मैं तब तक रूम में बैठी रही जब तक कि रोना नहीं बंद कर दिया। मैं तुम्हारे बिल्डिंग छोड़ने का इंतजार किया। फिर बाथरूम में गयी और अपने चेहरे को धोया और फिर पेज को पूरा करने में जुट गयी।

अब हम लोगों के बोलने का समय है

इसलिए कृपया झूठ बोलना बंद कीजिए। "एशियन एज" वाले अपने केबिन में प्लाईवुड और ग्लास के बारे में झूठ बोलना बंद करिए। गजाला वहाब अकेली महिला नहीं थीं जिसका उस केबिन में आपने यौन उत्पीड़न किया था। दूसरी पीड़ति भी हैं जिन्हें तुमने बिल्कुल तोड़ दिया है और अपनी हवस और सत्ता की हनक में बिल्कुल बरबाद कर दिया। वो भी नाराज हैं और वो भी बाहर आएंगी।

और अब कानूनी धमकी बहुत हो गयी- हम लोग भी तुमको अदालत में देख सकते हैं। उसी तरह का बहनापा जो हमारे काले दिनों के दौरान था फिर से सिर्फ इसलिए जिंदा हो जाएगा क्योंकि तुम लगातार बेशर्मी दिखा रहे हो। हम भ्रम में नहीं हैं, न किसी झगड़े-झंझट में हैं और न ही बहुत ज्यादा कमजोर। अब हमारे बोलने का समय आ गया है- किसी के द्वारा सुनवाई से पहले हमें भागकर पुलिस स्टेशन शिकायत दर्ज कराने के लिए नहीं जाना है। तुम जानते हो हम लोग कौन हैं। जब बैरिकेडों पर देखोगे तो तुम हमें पहचान लोगे।

कुछ पश्चाताप दिखाओ। तुम्हे मदद की जरूरत है।

(तुषिता पटेल "एशियन एज" लांच करने वाली टीम की सदस्य थीं। उन्होंने 2000 में इस्तीफा दिया था।

हे योगी जी! प्रभु श्रीराम का चरित्र ही सम्राट अकबर की निर्दोषिता है

या तो कौशल्यानंदन राम वचनभंग के अपराधी हैं या प्रयाग नगर न था! मैं प्रयाग को नगर नहीं मानता। क्योंकि प्रयाग को नगर मानता हूँ तो मेरे राम लल्ला बेइमान और मर्यादाहीन हो जाते हैं। अगर रामपथ के स्थान श्रृंगवेरपुर, प्रयाग और चित्रकूट या आगे जो भी स्थान आए वे नगर रहे होते तो राम के लिए सब के सब स्वत: निषिद्ध या वर्ज्य क्षेत्र हो जाते थे। अयोध्या त्यागने के बाद राम लल्ला वनवास अवधि तक मात्र वनक्षेत्र में ही प्रवेश के अधिकारी थे। किसी भी नगर तो क्या ग्राम प्रवेश से भी वचन भंग तय था।

इसीलिए राम न वालि की किष्किंधा में गए न रावण की लंका में। वे चौदह वर्ष आश्रम-आश्रम भटकते रहे। स्वयं न जाकर लक्ष्मण को सुग्रीव को धमकाने भेजा। जब वो तारा और राज्य पाकर सीता की खोज से विरत हो गया था। राम किसी नगर में चरण रख ही नहीं सकते थे।

या प्रयाग को एक प्राचीन नगर सिद्ध करने के लिए हम मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम को पथभ्रष्ट पुरुषोत्तम मान लें। हम मान लें कि आज के भक्त और प्रयाग को नगर मानने वाले सत्य हैं या रघुवंशी भगवान राम। दोनों का सत्य होना भी राम को धर्मराज युधिष्ठिर की तरह अर्धसत्य की दशा में ला ख ?ा करेगा। उनको कलंकित करेगा।

हमारे लिए यह कल्पना करना भी असंभव है कि माता कैकेयी और पिता दशरथ को दिए वचन श्रीराम के लिए प्रयाग आते ही व्यर्थ हो गए थे। या प्रयाग नगर का भ्रमण कराकर तथाकथित प्रयाग भक्त राम के जीवन और अटल व्रती चरित को एक अवसरवादी व्यक्ति में बदल देने पर आमादा हैं।

आप सभी विद्वान लोग प्राचीन भारत की वन गमन की शर्तों को रामायण और महाभारत दोनों में देख सकते हैं। वन-जंगल नदी तट तीर्थ सरोवर आश्रम गुरुकुल के अतिरिक्त किसी स्थापित नगर में न निवास होगा न प्रवेश। तभी वनवास पूर्ण होगा। वन वह क्षेत्र था जहाँ स्थाई भवन न बने हों। आज के सेकेंड होम की तरह एक घर वन में की संकल्पना अकल्पनीय थी।

राम और उनका खानदान जिसे रघुवंश के रूप में अखिल भारत और शेष विश्व मानता है, वह अपनी वचनबद्धता के लिए ही जाना जाता है। प्रयाग को नगर मानते ही रघुवंश पर बट्टा लगता है। मनु और सत्यहरिश्चंद्र का वंश कलंकित होता है। भगीरथ का वंशज राम नगर प्रवेश का दोषपूर्ण काम कैसे कर सकता है। राम ऐसे प्रतीक पुरुष हैं जो पिता के वचन की रक्षा के लिए आन पर राज्याभिषेक के जल और मुकुट को त्याग कर तपसी बन कर निकल प ?ते हैं। वो किसी भी तरह प्रयाग नगर में पैर नहीं धर सकते थे।

मैं भक्तों से अधिक राम को जानता हूँ, वह कौशल्यानंदन इतने नगर भ्रमणोत्सुक न थे कि कुल और स्वयं की मानहानि पर उतर आएं। राम सौ जनम प्रयाग न जाते अगर वह नगर होता। मेरी बात पर किसी रामायण मर्मज्ञ और व्यख्याकार से वार्ता की जा सकती है। हाँ आज के मौकापरस्त लोगों का अपना कोई वचनभंग करनेवाला अवसरवादी राम हो तो यह और बात होगी। तब भारत में धर्म मर्म की रक्षा के लिए राम दुहाई बंद करके किसी और राम की खोज करनी होगी! अब प्रयाग को नगर सिद्ध करने के लिए या तो राम को वचन तो ?ने वाला पुरुष माना जाए या यह कि भरद्वाज मुनि के समय का प्रयाग नगरीय न था। आबादी न थी। केवल आश्रम और तीर्थ था।

-बोधिसत्व

पत्रकार हमेशा सत्ता का स्थायी विपक्ष होता है - गणेश शंकर विद्यार्थी

इम्तियाज अहमद

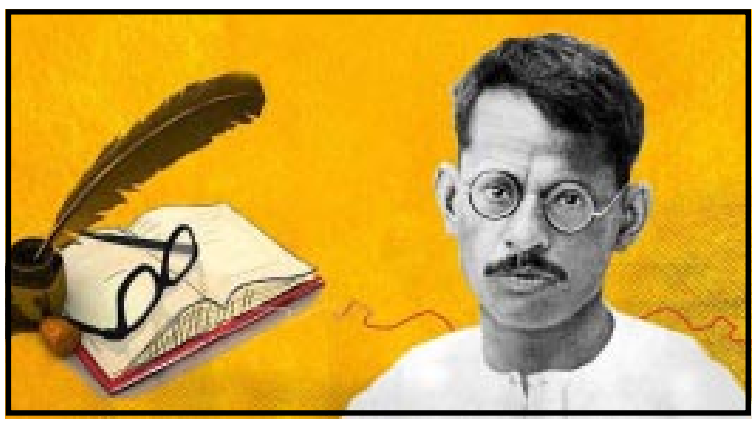

26 अक्टूबर 2018,लखनऊ ?पत्रकारिता और सिर्फ पत्रकारिता करने वालों के लिए आज का दिन बहुत महत्व रखता है। आज ही के दिन गणेशशंकर विद्यार्थी जैसी महान हस्ती का जन्म हुआ था। उनके अंदर जन सरोकार वाली पत्रकारिता की मूल भावना ही थी, जिस कारण उन्होंने दंगों में फंसे कुछ असहाय लोगों को बचाने के लिए अपनी जान गंवा दी। एक पत्रकार के लिए इससे बढ़ी उपलब्धि और क्या हो सकती है।

26 अक्टूबर 1890 को इलाहाबाद में जन्में गणेश शंकर विद्यार्थी की ख्याति को इसी बात से समझा जा सकता है कि महावीरप्रसाद द्विवेदी, माखनलाल चतुर्वेदी, अमृतलाल नागर जैसे महान साहित्यकार उनकी प्रतिभा के कायल थे। रामप्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह जैसे क्रांतिकारी लोग उनके करीबी थे। रामप्रसाद बिस्मिल की आत्मकथा को उन्होंने प्रताप में प्रकाशित किया। अपने जीवनकाल में उन्होंने प्रताप, अभ्युदय, प्रभा जैसे पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया।

विद्यार्थी जैसे सम्पादकों की हालत का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि वे किसी तरह से पैसे जुटा कर अखबार निकालते थे। विद्यार्थी जी कभी भी अध्ययन कक्षों के पत्रकार बुद्धिजीवी नहीं रहे। अपने निर्भीक लेखन के साथ-साथ उन्होंने लगातार मज़दूर, किसान आन्दोलनों में भी शिरकत की थी जिसके कारण वे बार-बार सत्ता के गुस्से का शिकार हुए।

कहा जाता है कि भगत सिंह को भगत सिंह बनाने में उनका बड़ा योगदान रहा। अंग्रेजों से बचने के लिए भगत सिंह कुछ दिन प्रताप के दफ्तर में ठहरे। भगत सिंह का पहला पत्रकारीय अनुभव भी प्रताप के लिए रहा जब दिल्ली में दंगों की वजह जानने के लिए गणेश शंकर विद्यार्थी ने भगत सिंह को भेजा था। इसी तरह तमाम क्रांतिकारियों से उनके अच्छे सम्पर्क थे। जिनके विचारों को अपने अखबार के द्वारा वे देश के लोगों के बीच फैलाने का काम करते थे।

अंधराष्ट्रवाद के खतरों के बारे में गणेशशंकर विद्यार्थी ने आजादी के आंदोलन के समय ही आगाह कर दिया था. तब भी हिंदू राष्ट्र के पैरोकारों की एक धारा सक्रिय थी। राष्ट्रीयता शीर्षक से लिखे अपने इस लेख में वे कहते हैं, 'हमें जानबूझकर मूर्ख नहीं बनना चाहिए और गलत रास्ते नहीं अपनाने चाहिए. हिंदू राष्ट्र-हिंदू राष्ट्र चिल्लाने वाले भारी भूल कर रहे हैं. इन लोगों ने अभी तक राष्ट्र शब्द का अर्थ ही नहीं समझा है.' राष्ट्र शब्द को लेकर उनका विचार था कि राष्ट्र ऐसा होना चाहिए जहां राष्ट्र के लोगों का शासन होना चाहिए। राष्ट्र के लोगों से उनका तात्पर्य देश में रहने वाले समस्त लोगों से था, चाहे वो जिस भी धर्म या जाति से हों।

धर्म पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्हीने कहा था कि अच्छे आचरण वाले नास्तिकों का दर्जा धर्म के नाम पर दूसरे की आजादी रौंदने और उत्पात मचाने वालों से ऊंचा है। धर्म को वे उन्मादी और साम्प्रदायिक रूप में स्वीकार नहीं करते थे। वे जीवन भर संप्रदायिकता के खिलाफ लड़े।

23 मार्च को भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु की फांसी के बाद देश में माहौल बहुत तनाव पूर्ण था। उसी के तीसरे दिन कानपुर में दंगे शुरू हो गए। गणेश शंकर विद्यार्थी ऐसे में चुप कहाँ बैठते। उन्होंने दंगों को शांत कराने के लिए ठानी और खुद ही निकल पड़े। कुछ जगहों पर वे लोगों को शांत कराने में सफल रहे। अचानक एक जगह पर एक परिवार को बचाने के दौरान उनकी जान ले ली गई। बताते हैं कि उनका शव कई दिनों तक लाशों के ढेर में पड़ा रहा। महज 40 साल की अल्पायु में साम्प्रदायिकता और धार्मिक कट्टरपन ने उनकी भेंट ले ली।

कहा जाता है कि उनकी मौत के बाद कानपुर के हिन्दू-मुस्लिमों ने कसम खाई कि आज के बाद वो कोई दंगा नहीं करेंगे। उन्हीं की याद में हर साल होली के बाद गंगा मेला लगाया जाता है जिसमें दोनों समुदाय के लोग आपस मे गले मिलते हैं। गणेश शंकर विद्यार्थी भले ही आज हमारे बीच नहीं है पर उनके विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। दिलों में फैली नफरत के दौर में आज उनके विचारों की ही जरूरत है।